हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर

आई. एच. बी. टी.

बाँस प्रवर्धन की नई विधियां

– किसानों के लिए जानकारी –

फसलों के बाद यदि किन्हीं अन्य पौधों ने मानव जीवन को अधिक प्रभावित किया है, तो वे हैं 'बाँस'। बाँसों के बहुआयामी उपयोगों को देखकर इन्हें वनों का '**हरा सोना**' भी कहा जाता है। चीन के बाद भारत का बाँस उत्पादन में दूसरा स्थान है। कागज बनाने के अतिरिक्त भारत सहित एशिया के अनेक देशों के ग्रामीण क्षेत्रों में लोग घर बनाने, भूमि संरक्षण, चारे तथा पानी की नालियों के लिए तथा दैनिक उपयोग की अनेक वस्तुएं बनाने के लिए प्रचुर मात्रा में बाँसों का उपयोग करते हैं। हिमाचल में तो एक पिछड़ा वर्ग बाँसों से ही अपना जीवनोपार्जन करता है।

बाँसों के बढ़ते प्रयोग, प्राकृतिक विपदाओं जैसे आग लगना तथा सामूहिक रूप से बाँसों के जंगलों में फूल आना आदि की विभीषिका कुछ कम नहीं है। बाँसों का चौथे वर्ष में ही कटान योग्य तैयार हो जाना, ढलानों की मिट्टी को कस कर जकड़े रखना तथा बहुआयामी उपयोग कुछ ऐसी विषेशताएं हैं जिनके कारण कोई अन्य वृक्ष बाँस का स्थान निकट भविष्य में नहीं ले सकता।

बाँस कहाँ लगाएं ?

बाँसों को लगाने के लिए खाली पहाड़ियों की ढलान, नदी–नालों के किनारे, रेलवे लाइनों तथा सड़कों के किनारे काफी उपयुक्त माने जाते हैं। फलों के बागों में चारों ओर बाँसों की ऊँची किस्मों को एक या दो कतारों में लगा कर तेज हवाओं से बखूबी बचाव किया जा सकता है।

बाँसों का प्रवर्धन कैसे करें ?

अब हम बाँसों को लगाने के विभिन्न तरीकों का वर्णन करेंगे।

1. *बीजों द्वारा* :–

यह एक स्वाभाविक पद्धति है परन्तु अन्य पौधों की अपेक्षा बाँसों में फूल आने का अन्तराल अनिश्चित तथा लम्बा (लगभग 3–4 वर्षों से लेकर 120 वर्षों तक) होता है । बीज बनाने के बाद साधारणतया बाँस सूख जाता है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि बीजों द्वारा अंकुरित बाँसों के पौधों में काफी भिन्नता होती है। अतः इस प्रकार से पौधों की गुणवत्ता संदेहास्पद बनी रहती है।